Mahila college Daltonganj
Department of History
B.A II (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date :- 22/02/2024

Topic

पाल - वंश का पतन (1120-1155 ई)

रामपाल के पश्चात क्रमशः कुमारपाल, गोपाल तृतीय और मदनपाल ने शासन किया। उनका कुल समय 30 वर्ष का रहा। उनके समय में आन्तरिक संघर्षों, सामन्तों के विद्रोहों और विदेशी आक्रमणों ने पाल-वंश को नष्ट कर दिया। कुमार पाल के समय में कामरूप में विद्रोह हुआ। कुमार-पाल ने अपने मंत्री वैद्यदेव को उसे दबाने के लिए भेजा। वैद्यदेव ने विद्रोह हुआ। कुमारपाल ने अपने मंत्री वैद्यदेव को उसे दबाने के लिए भेजा। वैद्यदेव ने विद्रोह को तो दबा लिया परन्तु कामरूप में अपने स्वतंत्र स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली। उसी समय पाल-शासकों पर अन्य शासकों ने आक्रमण किये। कलिंग के शासक अनन्तवर्मा ने उड़ीसा पर अधिकार करके बंगाल में हुगली तक आक्रमण किये और कन्नौज के शासक गोविन्दचन्द्र ने पटना पर अधिकार कर लिया परन्तु पाल-वंश के मुख्य शत्रु सेन और नय-शासक सिद्ध हुआ। विजयसेन ने मदनपाल से

गौड़ को छीन लिया और गोविन्दचंद्र ने उसके उत्तरी बिहार तक सीमित रह गयी। मदनपाल के उत्तराधिकारियों के बारे में कुछ पता नहीं लगता। 12वीं सदी के मध्य तक पाल-वंश समाप्त हो गया और उसके अन्तिम शासक मदनपाल की मृत्यु एक साधारण सामंत के रूप में हुई।

पाल-वंश का महत्व

पाल-शासकों ने बंगाल में एक समृद्धशाली राज्य की स्थापना की और लगभग 400 वर्ष तक (विशेषकर उत्तरी भारत की राजनीति में) बंगाल के महत्व को स्थापित रखा। इसके अतिरिक्त, पाल-शासक बौद्ध धर्म, साहित्य और ललित कलाओं के संरक्षक थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रसार और तान्त्रिक बौद्ध सम्प्रदाय के निर्माण में भाग लिया। बंगाल भाषा और साहित्य के निर्माण में सहयोग दिया, ऐसी चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्य-कला का विकास किया जो दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों की कला को प्रभावित कर सकी, अनेक बौद्ध-विहारों एवं मठों का निर्माण किया, विक्रमशिला के विद्यापीठ की स्थापना की और नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रगति में सहयोग दिया। 1203 ई० में मुस्लिम आक्रांता बख्तियार खिलजी ने इस राजवंश को ध्वस्त कर दिया।